अथर्ववेद में विष चिकित्सा

Purnima Acharya

Sanskrit Department, M.M.V., Banaras Hindu University, Varanasi-5

Abstract

Vedas were the source of knowledge from ancient times. Atharveda deals with different types of treatment of diseasessul as sun treatment, water treatment, poison treatment, air treatment etc.

Treatment of snake venom with the help of mandra is discussed in the Atharveda. Other methods are by the use of water, fire and soil or clay. Different plants are used as autidotes e.g. Taboov, Tastuv, Shochi, Taroonak.

Varanavati River is also used as an autidote. It is also said that bitting snake must be killed so that venom returns to the dead snake.

'Kand' is also used as autidote which is found an the mountains.

Athrvaveda is the store house of poison treatment and can be used by doctors to cure the patient.

आदिकाल से ही वेद मानव जाति के लिए प्रकाश-स्तम्भ रहे हैं। वेदों में ज्ञान और विज्ञान का अनन्त भण्डार है। अत एव मनु ने वेदों को सर्वज्ञानमय कहा है-

'सर्वज्ञानमयो हि स:'[१]

वेदों में आयुर्वेद विषयक सैकड़ों मन्त्र हैं, जिनमें विविध रोगों की चिकित्सा वर्णित है। अथर्ववेद में रोग, रोग के कारणों, उनके निवारण के उपायों, रोगनाशक औषधियों एवं वनस्पतियों तथा रोग दूर करने वाले वैद्यों (भिषक्) आदि की विस्तृत चर्चा है। सम्भवत: इसी कारण अथर्ववेद को भेषज अर्थात् भिषग्वेद् भी कहा गया है।

अथर्ववेद में सूर्यचिकित्सा, जलचिकित्सा, विषचिकित्सा, पशुचिकित्सा, प्राणचिकित्सा, शल्यचिकित्सा आदि के विस्तृत वर्णन देखे जा सकते हैं। जिनमें विष-चिकित्सा का वर्णन करना प्रस्तुत शोध पत्र का प्रतिपाद्य विषय है। विष के प्रभाव के निवारण, प्रतिकार और नष्ट करने के उपायों को विष-चिकित्सा कहते हैं। इसके विषय में विस्तारपूर्वक जानने से पूर्व यह जानना अति आवश्यक है कि विष क्या है? विष के विषय में पंचतन्त्र में वर्णन है-

विषं भवतु मा भूद्वा फणाटोपो भयङ्कर:[२]

इसी प्रकार चन्द्रालोक में वर्णित है-

विषं जलधरै: पीतं मूर्च्छिता: पथिकाङ्गना:[३]

विष दो प्रकार के होते हैं-

१. अकृत्रिम विष, २. कृत्रिम विष

१. अकृत्रिम विष - ये दो प्रकार के होते हैं- (अ) स्थावर, (आ) जङ्गम।

(अ) स्थावर विष - फल फूलादि कन्दों में रहने वाला विष स्थावर विष है। यह कालकूट, हलाहल आदि है।

(आ) जङ्गम विष- सर्प, बिच्छू, मकड़ी आदि की दाढ़ों में रहने वाला विष जङ्गम विष है।

२. कृत्रिम विष- विभिन्न औषधियों से बनाया गया विष कृत्रिम है। उसे 'गर' भी कहते है। यह तीक्ष्ण गुणों के कारण ओज को नष्ट करता है और वात पित्त प्रधान होने से जीवन को नष्ट करता है।[४]

विष चिकित्सा निम्नलिखित प्रकार से की जाती है-

१. मन्त्रों द्वारा चिकित्सा, २. अग्नि द्वारा चिकित्सा,
३. जल द्वारा चिकित्सा, ४. मृत्तिका द्वारा चिकित्सा,
५. औषधियों द्वारा चिकित्सा

१. मन्त्रों द्वारा चिकित्सा -

अथर्ववेद में मन्त्र द्वारा विष के प्रभाव को नष्ट करने के विषय में वर्णन है। मंत्र शक्ति से विष का प्रभाव उतर जाता है-

वाचं विषस्य दूषणीं तामितो निरवादिषम्।[५]

इसे झाड़-फूँक भी कह सकते हैं। बाण से, फाल से, सींग आदि के लगने से जो विष उत्पन्न होता है, उस विष को भी मंत्र शक्ति से दूर किया जा सकता है-

Vimana Bharati

शल्याद् विषं निरवोचम्।[६]

अथर्ववेद में सर्प के विष की चिकित्सा भी मन्त्र द्वारा करने का वर्णन है-

चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि विषेण हन्मि ते विषम्।

सर्प! म्रियस्व मा जीवीः प्रत्यगभ्येतु त्वा विषम्।।[७]

अर्थात् हे सर्प! अपनी दृष्टि शक्ति से मैं तुम्हारी दृष्टि शक्ति को नष्ट करता हूँ। विष से तुम्हारे विष को नष्ट करता हूँ। तुम मर जाओ। जीवित मत रहो। तुम्हारा विष तुम्हारे पास ही चला जाए।

२. अग्नि द्वारा चिकित्सा-

अथर्ववेद में विष चिकित्सा में अग्नि का प्रयोग करने का वर्णन प्राप्त होता है। सर्प का विष उतारने के लिए सर्प द्वारा काटे गये अंश को गर्म लोहे आदि से दाग देने पर सर्प का विष नष्ट हो जाता है-

अग्निर्विषम् अहेर्निरधात्[८]

३. जल द्वारा चिकित्सा-

रूद्र को जल चिकित्सा का आविष्कारक माना गया है। जल चिकित्सा को 'जलाषभेषज' कहा गया है। जल चिकित्सा को उग्र भेषज अर्थात् शीघ्र लाभकारी दवा कहा गया है-

जालाषमुग्रं भेषजम् । जालाषेणाभिषिञ्चत०।[९]

अथर्ववेद में सर्प विष को दूर करने के लिए जल चिकित्सा का वर्णन किया गया है। नदी के जल में नहाने, तैरने, आदि से सर्प का विष नष्ट होने का उल्लेख है।

सिन्धोर्मध्यं परेत्य व्यनिजमहेर्विषम्।[१०]

अहीनां सर्वेषां विषं परा वहन्तु सिन्धवः।[११]

अथर्ववेद में नदियों एवं पर्वतों के झरने आदि के जल से सर्प विष दूर करने का वर्णन प्राप्त होता है-

मध्वा पृञ्चे नद्यः पर्वता गिरयो मधु।[१२]

अभिप्राय यह है कि नदी में बहुत देर तक स्नान किया जाये। झरने के जल के नीचे बैठकर जलधारा को सिर और शरीर पर लें। इससे विष का प्रभाव कम होगा।

अथर्ववेद में वरणावती या वरण को विषनाशक कहा गया है। वरण वृक्ष की अधिकता के कारण नदी का नाम भी वरणावती पड़ा है। इसके जल को विषनाशक कहा गया है-

वारियं वारयातै वरणावत्यामधि।

तेना ते वारये विषम्।[१३]

४. मृत्तिका द्वारा चिकित्सा -

वेदों में चिकित्सा के लिए मिट्टी के उपयोग का विधान है। अथर्ववेद का कथन है कि दीमक समुद्र की मिट्टी बाहर निकालकर बमी बनाती है, उसकी मिट्टी विषनाशक है-

यद् वो देवा उपजीका ..... इदं दूषयता विषम्।[१४]

सुश्रुत संहिता कल्पस्थान में भी सर्पदंश में बमी की मिट्टी को दूध, घी, मधु के साथ मिलाकर पिलाने का विधान है। सुश्रुत का कथन है कि अन्य औषधि न मिले तो बमी की मिट्टी को दूध, घी या मधु के साथ मिलाकर पिलायें।

पाययेतागदांस्तांस्तान् क्षीरक्षौद्रघृतादिभिः।

तदभावे हिता वा स्यात् कृष्णा वाल्मीकमृत्तिका।[१५]

५. औषधियों द्वारा चिकित्सा-

अथर्ववेद औषधियों का ग्रन्थ है। इसमें सैकड़ों सूक्त औषधियों एवं आयुर्वेद से सम्बद्ध हैं। अथर्ववेद में ऐसी अनेक औषधियों का में वर्णन है जिनसे विष का उपचार किया जाता है। अथर्ववेद में ताबुव और तस्तुव औषधियों को सर्पविष नाशक बताया गया है-

ताबुवेनारसं विषम्।[१६]

तस्तुवेनारसं विषम्।[१७]

ताबुव और तस्तुव औषधियों के गुण कटु तुम्बी (कड़वी लौकी) और तिक्त कोशातकी (कड़वी तोरई) में पाये जाते हैं। इसको वमनकारक कहा जाता है। यह वमन विष के प्रभाव को बाहर निकाल देती है।

अथर्ववेद में इन पाँच औषधियों को सर्पविषनाशन कहा गया है- १. दर्भ (कुश), २. शोचि, ३. तरुणक (रोहिष तृण, सुगन्ध तृण या कतृण, ४. अश्ववार या अश्ववाल (कास नामक तृण), ५. परुषवार (मुंज या मूँज)।

दर्भः शोचिस्तरुणकम् अश्वस्य वारः परुषस्य वारः।[१८]

अथर्ववेद में अरधुंष और पैदव औषधि को सर्पविषनाशक कहा गया है।

अरंघुषः। पैदवो हन्ति कसर्णीलं०।[१९]

Vijnana Bharati

ये दोनों ही शब्द सफेद आक के बोधक हैं। अथर्ववेद का ही कथन है कि पैदव अर्थात् सफेद आक के जड़ और फूल के चूर्ण को डाल देने से सर्प का भय नहीं रहता है और रास्ते में यदि सर्प होगा तो हट जायेगा।[२०] आक के फूलों के रस और चूर्ण का इतना प्रभाव बताया गया है कि यदि वह साँप के मुँह में डाल दिया जाय तो वह खुले मुँह को बन्द नहीं कर सकता है और यदि मुँह बन्द है तो उसे खोल नहीं सकता।

संयतं न वि ष्परद् व्यात्तं न संयमत् ।[२१]

अथर्ववेद में इन्द्र को सर्पविष नाशक कहा गया है।

इन्द्रो मे अहिम् .... अरन्धयत्।[२२]

अथर्ववेद में कुमारिका औषधि को भी सर्पविष नाशक कहा गया है।

कैरातिका कुमारिका०।[२३]

अपराजिता औषधि को भी विशनाशक कहा गया है।

पृश्निहापराजितः।[२४]

इसे हिन्दी में कोयल, विष्णुकान्ता आदि कहते हैं। अथर्ववेद में इसे सर्प और बिच्छू दोनों का विष नष्ट करने वाला कहा गया है। अथर्ववेद की पैप्पलाद शाखा में इसका उल्लेख है।

शतद्रष्टां सहस्रां जयन्तीम् अपराजिताम्।[२५]

अथर्ववेद में तौदी, घृताची और कन्या नामक औषधि को सर्पविनाशक कहा गया है।

तौदी नामासि कन्या घृताची नाम वा असि।[२६]

राजनिघण्टु में बड़ी इलायची का नाम कन्या और घृताची कहा गया है। अतः ये तीनों ही नाम बड़ी इलायची के हैं-

स्थूलैला ..... कन्या कुमारिका चैन्द्री।

कायस्था ..... घृताची गर्भसंभवा।[२७]

अथर्ववेद के एक सूक्त में मधुला, मधु, मधुलता और मधुश्चुत् औषधि का गुणगान किया गया है। इसे सर्प और बिच्छू के विष का नाशक बताया गया है। इसे मच्छर मारने की दवा भी कहा गया है।

इयं वीरुन्मधुजाता मधुश्चुद् मधुला मधूः।

सा विह्रुतस्य भेषजी-अथो मशकजम्भनी।[२८]

अथर्ववेद में बाण के विष को दूर करने के लिए मुलहठी का उपयोग बताया गया है-

कङ्कपर्वणो विषमियं वीरुद् अनीनशत्।२९

अथर्ववेद में करम्भक को विषनाशक कहा गया है-

अथेदम् अधराच्यं करम्भेण वि कल्पते।[३०]

अथर्ववेद में वच या वचा औषधि को विषनाशक कहा गया है। इसके लिए कहा गया है कि यह विष को ऐसे ही दूर फेंक देता है, जैसे धनुष से फेंका हुआ बाण।

वचसा स्थापयामसि।[३१]

बिच्छू एवं विषधर कीटों के काटने में पुनर्नवा का लेप महौषधि है।

या रोहन्ति पुनर्णवाः।[३२]

अथर्ववेद एवं पैप्पलाद संहिता में अभ्रिखाता का उल्लेख है। यह विषनाशक है।

अभ्रिखाते न रूरुपः।[३३]

अलाबू नामक औषधि का अथर्ववेद में उल्लेख प्राप्त होता है। इसका विशेष रूप से सर्पविष एवं सामान्यतया विष नाश में प्रयोग होता है।

अलाबु पात्रं पात्रम्।[३४]

आल नामक औषधि का प्रयोग भी विषनाशन में किया गया है।

अपेहि निराल।[३५]

अथर्ववेद में उत्तानपर्णा को भी विषनाशक कहा गया है। यहा पाठा या पाढ़ा लता है। सुभगा, देवजूता, सहस्वती, इसके पर्याय हैं।[३६]

पैप्पलाद संहिता में विषनाशक औषधि कंकदन्ती का उल्लेख किया है।[३७]

अथर्ववेद में सर्पविष नाश करने में कनक्रक का उल्लेख किया गया है-

कनक्रकम्।[३८]

अथर्ववेद में कान्दाविष का विषनाशक औषधियों में उल्लेख किया गया है। यह एक विषैली कन्द है जो पहाड़ों पर होती है।

कान्दाविषम् ।[३९]

अथर्ववेद में कुष्ठ (कूठ) औषधि का भी विषनाशन के रूप में वर्णन किया गया है। यह औषधि हिमालय के ऊपर होती है।

Vijnana Bharati

कुष्ठेहि तक्मनाशन।[४०]

नद्यमार, नद्यारिष और नद्याय इसके पर्याय हैं।

पैप्पलाद संहिता में क्रकोष्मा का वर्णन विष नाशक औषधि के रूप में किया गया है।[४१] पैप्पलाद संहिता में ही खदिर का वर्णन विष के नाशक के रूप में किया गया है।[४२] अथर्ववेद में भी खदिर का उल्लेख है–

अश्वत्थात् खदिराद्धवात्।[४३]

अथर्ववेद में ही पुण्डरीक को भी विष के नाशक के रूप में बताया गया है। सफेद कमल को पुण्डरीक कहते हैं। यह तालाबों में होता है।

ह्रदो वा पुण्डरीकवान्।[४४]

पुण्डरीकं नवद्वारम्।[४५]

इसके अतिरिक्त पुष्कर का भी विष नाशक के रूप में वर्णन प्राप्त होता है। पुष्कर का अर्थ भी कमल होता है।

अथर्ववेद में विषनाशक के रूप में बभ्रू का उल्लेख किया गया है। यह सहस्रपर्णी (शंखपुष्पी) का विशेषण है।

बभ्रु कल्याणि सं नुद।[४६]

पैप्पलाद संहिता में वृश्चिकजम्भन नामक औषधि का उल्लेख प्राप्त होता है। यह बिच्दू मारने और बिच्छू के विष का प्रभाव नष्ट करने वाली औषधि है।[४७]

अथर्ववेद में सर्पविषनाशक के रूप में शीपाला का उल्लेख मिलता है। यह नदी एवं तालाबों में होता है। सामान्य भाषा में इसे शैवाल या सेवार भी कहते हैं।

मधु परूष्णी शीपाला।[४८]

अथर्ववेद में विषनाशक औषधि के रूप में साल, शाल का वर्णन किया गया है–

निःसाला घृष्णुं घिषणम्।[४९]

सायण ने साल को वृक्ष विशेष माना है। इसी को शाल भी कहते हैं।

इन सभी औषधियों के अतिरिक्त अथर्ववेद में सोमपान को विषनाश का उपाय कहा है। सोमपान करने वाले पर विष का प्रभाव नहीं होता।

ब्राह्मणो जते प्रथमो दशशीर्षो दशास्यः।

स सोमं प्रथमः पपौ स चकारासं विषम्।।[५०]

अर्थात् दस प्रकार के रोगों को दूर करने वाला और अङ्गों की पीड़ा निकालने वाला विद्वान् ब्राह्मण चिकित्सक पहले उत्पन्न हुआ। उसने पहले सोमपान किया और उसने विष को शक्तिहीन कर दिया।

इन उपायों के अतिरिक्त अथर्ववेद में वर्णन है कि साँप के काटने पर कटे हुए स्थान से चार अंगुल ऊपर बन्धन या गाँठ लगानी चाहिए। गाँठ इस प्रकार कसकर लगानी चाहिए कि विष का प्रभाव ऊपर न जाने पाए। इस प्रकार उत्तम, मध्यम और अधम तीनों प्रकार का विष रुक जाता है।

गृह्णामि ते मध्यमम् उत्तमं रसमुतावमम्।[५१]

अथर्ववेद में वाद्ययन्त्र अर्थात् ढोल, नगाड़ा आदि के तीव्र स्वर से भी सर्पविषनाशन का उल्लेख है।

उग्रेण ते वचसा बाध आदु ते।[५२]

साँप के विष को उतारने के लिए बाहरी विष के प्रयोग के लिए भी कहा गया है। ऐसा करने से बाहरी विष सर्प के विष को नष्ट कर देता है।

विषेण हन्मि ते विषम्।[५३]

अथर्ववेद के एक मन्त्र में यह भी कहा गया है कि काटने वाले साँप को मार देना चाहिए। इससे साँप के विष का प्रभाव साँप पर लौट जाता है।

अहे! म्रियस्व या जीवीः प्रत्यगभ्येतु त्वा विषम्।[५४]

इस प्रसङ्ग में अथर्ववेद में यह भी कहा गया है कि गरुड़ साँपों को खाता है। गरूड़ के लिए विष भोजन है। अतः यह शोध का विषय है कि गरुड़ पर विष का प्रभाव क्यों नहीं होता।

सुपर्णस्त्वा गरुत्मान् विष प्रथममावयत्।[५५]

इस सूक्त में यह भी कहा गया है कि विष के पर्वत को भी निर्विष किया जा सकता है।

वध्रिः स पर्वतो गिरिर्यतो जातमिदं विषम्।[५६]

इसकी विधि भी गवेषणीय है।

इस प्रकार प्रस्तुत शोधपत्र में अथर्ववेद में वर्णित विष चिकित्सा के विभन्न प्रकारों के विषय में वर्णन किया गया है। इस ज्ञान का उपयोग चिकित्सकगण निश्चित रूप से जनमानस के कल्याण में कर सकते हैं। जिससे विष से होने वाली हानि से जनमानस की प्राण रक्षा की जा सकती है। आधुनिक दवाईयाँ बीमारी ठीक तो करती है लेकिन उनका नकारात्मक प्रभाव अन्य

Vijnana Bharati

बीमारियों को उत्पन्न करता है। किन्तु अथर्ववेद में वर्णित विष चिकित्सा का कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं होता है। अतः आधुनिक चिकित्सकों की दृष्टि से अथर्ववेद का अध्ययन करना चाहिए। जिससे साधारण जनमानस वर्तमान समय की औषधियों के नकारात्मक प्रभाव से सुरक्षित रहे।

सन्दर्भ :

१. मनुस्मृति २/७।

२. पंचतन्त्र १/२०४।

३. चन्द्रालोक ५/८२।

४.अष्टांग्हृदय, उत्तर स्थान, अध्याय ३५, श्लोक १-१०।

५. अथर्ववेद ४.६.५।

६. अथर्ववेद ५.१३.४।

७. अथर्ववेद १.२०४।

८. अथर्ववेद १०.४.२६।

९. अथर्ववेद ६.५७.२।

१०. अथर्ववेद १०.४.१९।

११. अथर्ववेद १०.४.२०।

१२. अथर्ववेद ६.१२.३।

१३. अथर्ववेद ४.७.१।

१४. अथर्ववेद ६.१००.२।

१५. सुश्रुत, कल्पस्थान, ५.१७

१६. अथर्ववेद ५.१३.१०।

१७. अथर्ववेद ५.१३.११।

१८. अथर्ववेद १०.४.२।

१९. अथर्ववेद १०.४.४, ५।

२०. अथर्ववेद १०.४.६।

२१. अथर्ववेद १०.४.८।

२२. अथर्ववेद १०.४.१०, १२।

२३. अथर्ववेद १०.४.१४।

२४. अथर्ववेद १०.४.१५।

२५. पैप्पलाद संहिता २०.२०.६।

२६. अथर्ववेद १०.४.२६।

२७. राजनिघण्टु १-२।

२८. अथर्ववेद ७.५६.२।

२९. अथर्ववेद ७.५६.१।

३०. अथर्ववेद ४.७.२।

३१. अथर्ववेद ४.७.४।

३२. अथर्ववेद ८.७.८।

३३. अथर्ववेद ४.७.५; पैप्पलाद २.१.१-५।

३४. अथर्ववेद ८.१०.५।

३५. अथर्ववेद ६.१६.३।

३६. अथर्ववेद ३.१८.२।

३७. पैप्पलाद संहिता ५.९.१।

३८. अथर्ववेद १०.४.२२।

३९. अथर्ववेद १०.४.२२।

४०. अथर्ववेद ५.४.१-१२, १९.३९.१-१०।

४१. पैप्पलाद संहिता ९.१०.९।

४२. पैप्पलाद संहिता २.५८.१-६; १६.४२.६-८।

४३. अथर्ववेद ५.५.५।

४४. अथर्ववेद ६.१०६.१।

४५. अथर्ववेद १०.८.४३।

४६. अथर्ववेद ६.१३९.३।

४७. पैप्पलाद संहिता १९.४७.१-२।

४८. अथर्ववेद ६.१२.३।

४९. अथर्ववेद २.१४.१।

५०. अथर्ववेद ४.६.१।

५१. अथर्ववेद ५.१३.२।

५२. अथर्ववेद ५.१३.३।

५३. अथर्ववेद ५.१३.४।

५४. अथर्ववेद ५.१३.४।

५५. अथर्ववेद ४.६.३।

५६. अथर्ववेद ४.६.८।

Vijnana Bharati